प्रेस विज्ञप्ति

राजभाषा सप्ताह : उद्घाटन समारोह

नई दिल्ली। 14 सितंबर 2017 को साहित्य अकादेमी के परिसर में हिंदी सप्ताह का आरंभ हुआ। 14 से 21 सितंबर 2017 तक चलने वाले हिंदी सप्ताह के उद्घाटन के अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में हिंदी के प्रतिष्ठित कथाकार एवं भाषाकर्मी श्री प्रेमपाल शर्मा को आमंत्रित किया गया था। अपने संभाषण में उन्होंने भारतीय भाषाओं के प्रति अपनी गहरी चिंता प्रकट करते हुए कहा कि भारतीय भाषाएँ रोजगार दिलाने में असफल साबित हो रही हैं। कई उदाहरण देते हुए उन्होंने लोकसेवा आयोग, कर्मचारी चयन आयोग जैसे विभिन्न आयोगों द्वारा संचालित परीक्षाओं में भारतीय भाषाओं की उपेक्षा से पीड़ित छात्रों के संरक्षण की वकालत की। उन्होंने कोठारी आयोग की विभिन्न अनुंशसाओं का जिक्र करते हुए कहा कि कोठारी जी कहते थे, 'जिन नौकरशाहों को अपनी भाषा नहीं आती, उन्हें नौकरी में बने रहने का अधिकार नहीं है।' साहित्य एवं भाषा के माध्यम से ही व्यक्ति जन मन से जुड़ सकता है। प्रेमपाल जी का मानना है कि हम केवल संविधान के अनुच्छेद 343 के भरोसे नहीं रह सकते। हमें सामूहिक प्रयास से हिंदी एवं भारतीय भाषाओं को आगे लाना होगा। प्रेमपाल जी ने भारतीय भाषाओं के संवर्धन में अकादेमी के योगदान की सराहना की।

कार्यक्रम के आरंभ में साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने भेंटस्वरूप पुस्तक प्रदान कर प्रेमपाल जी का स्वागत किया। उन्होंने कहा कि मातृभाषा एवं राजभाषा का द्वंद्व पुराना है। सरकारी कर्मचारियों को हिंदी का प्रयोग ज्यादा से ज्यादा करना चाहिए – सचिव ने इस पुनीत कार्य के लिए सबका आह्वान किया। उन्होंने कहा कि अहिंदी भाषियों के लिए भारत सरकार की हिंदी प्रशिक्षण योजना भी संचालित होती है। सरकारी नियमों के अनुसार प्रत्येक कर्मी के लिए हिंदी में कार्य करना अनिवार्य है।

कार्यक्रम का संचालन अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने किया। उन्होंने हिंदी दिवस 2017 के अवसर पर संस्कृति मंत्रालय , भारत सरकार की सचिव रश्मि वर्मा की हिंदी में कार्य करने संबंधी अपील का पाठ भी किया। अंत में उपसचिव (प्रशासन) रेणु मोहन भान ने कार्यक्रम के मुख्य अतिथि एवं अकादेमी परिवार के सभी सदस्यों के प्रति औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन किया।